डॉ० किसलय पटेल (हिन्दी-विभाग)
वैशाली महिला महाविद्यालय, हाजीपुर।
दिनांक - 20-07-2020

B.A - II

तुलसीदास
(मानस का हंस)

आगे -
जीवन में जब प्रथम बार उन्हें नारी-आकर्षण व्यापा तो सुन्दरी तरुणी मोहिनी के प्रति वे आकर्षित हो गए। यह आकर्षण 'मोह' के स्तर तक जा पहुँचा। उन्हें हर घड़ी, मोहिनी का ध्यान ही रहने लगा।

इसी प्रकार जब कालान्तर में विधिवत रूप से वे विवाह कर रत्नावली को पत्नी के रूप में घर ले आये तो उनके प्रति, अपने गुरुतर उत्तरदायित्व का निर्वाह तो वे न कर सके क्योंकि अतिशय प्रेम के कारण उन्हें पत्नी की कटूक्ति को सुनकर वैराग्य का बाना ओढ़ना पड़ा, किन्तु रत्नावली के प्रति उनके हृदय में जो निर्मल, निष्पाप, निश्छल प्रेम भावना थी,

वह जीवन पर्यन्त उनके हृदय में ज्योति बनकर प्रकाशमान रही। रत्नावली की मृत्यु के बाद अपने जीवन के अन्तिम दिनों में तुलसी के चिन्तन में यह तथ्य इस प्रकार उजागर हुआ है —

रत्नावली, बाबा के पास बैठी उलाहना दे रही थी — "मुझे अपनी बातों से इतना - इतना रिझाया, फिर छोड़कर चले गए।"

रत्ना के मान को देखकर बाबा मुस्कराए, और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए स्निग्ध स्वर में कहा — "तुम्हें छोड़ा कहाँ प्रिये, रत्ना के प्रति मेरी रीझ ही तो राम-भक्ति बनी। वह चिरतरुणी और अनन्त सौन्दर्यमयी है, मैं आपनी राम रिझवार के लिए आज तक, तुम्हारी ऋणी हूँ। किसी पत्नी ने अपने पति को ऐसा सौभाग्यवान नहीं बनाया होगा।"

चंचल-चपल नयनों से बाबा

को निहारकर रत्ना बोली – " राजकुमारी विद्योतमा ने मूर्ख कालिदास को कवि-कुल-गुरु बना दिया, किन्तु तुम जो कुछ भी हो वह स्वेच्छा से बने हो। मैं बेचारी अपनी मूढ़ अहंता के आघातों के सिवा और तुम्हें क्या दे सकी ?"

" तुम्हारा वह अहंकार मेरी चेतना जड़ता को तोड़ने वाला हथौड़ा था। याद करो प्रिये, तुम्हीं ने मुझे मूलरूप से राम काव्य लिखने की प्रेरणा भी दी थी।"

रत्ना मुस्कराई, कहा — " याद है प्रिय, किन्तु मैंने तो मात्र काव्य रचना की प्रेरणा ही दी थी। यह रामचरितमानस तुम्हारी अनन्त प्रेरणा का फल है।"

" वह भी तो तुम्हीं हो रत्ना, सच कहता हूँ कि जब गृहस्थ था तब तुम रत्नावली थीं और जब विरक्त हुआ तब तुम्हीं मेरी रामरत्नावली बन गई।"

- क्रमशः